ईश्वर के नाम का जाप ईश्वर तक पहुँचाता है - सन्तों की कृपा

साधारण मनुष्य के लिए जो दुनियाँ में फंसा हुआ है, ईश्वर तक पहुँचने के लिए सबसे सरल उपाय यही है कि ईश्वर के नाम का उच्चारण बराबर किया जाए. उसके नाम का उच्चारण करने से वह नाम उसे उस ईश्वर से मिला देता है जो उसके दिल में रहता है. जितना ही वह इस पवित्र नाम का उच्चारण करता जायेगा उतना ही वह अपने अन्दर उस परमात्मा के नज़दीक पहुँचता जाएगा. अपने अन्दर से बुराइयों को निकालने और आनन्द और ईश्वर को प्राप्त करने का इससे आसान तरीक़ा और कोई नहीं है. नाम के उच्चारण से केवल मन ही शुद्ध नहीं होता बल्कि नाम भक्त को अपने भगवान से मिला देता है.

नाम की बरक़त जो मैं आपको सुना रहा हूँ, यह मेरा अपना ही तज़ुर्बा नहीं है बल्कि दुनियाँ के सभी सन्तों का यही तज़ुर्बा है. इसलिए मेरी आपसे यही गुज़ारिश है कि ईश्वर की सच्ची भक्ति करो, उसमें सच्चा विश्वास लाओ और उसका पवित्र नाम बराबर लेते रहो. इससे तुमको उसके दर्शन तुम्हारे अपने दिल में होंगे और तब सारे जगत में ही उस ईश्वर के दर्शन तुम्हें होंगे. ईश्वर का जो भी नाम तुम्हें प्यारा लगता हो उसे लेने में कोई दिक्क़त नहीं उसमें कुछ खर्च नहीं होता. इसके लिए न कोई खास बैठने का तरीक़ा है और न किसी और चीज़ की ज़रूरत है. तुम ईश्वर का नाम हर जगह, हर समय ले सकते हो. जब तुम हाथ-पाँव से काम कर रहे हो, तब उसका नाम ले सकते हो, जब तुम कहीं जा रहे हो - चाहें गाडी में, चाहे पैदल- तुम बड़ी आज़ादी से उसका नाम ले सकते हो. इस अभ्यास के कुछ दिनों बाद ख़ुद-ब-ख़ुद ही तुमको अपने अन्दर 'शब्द' सुनाई देगा. तुम्हारे अन्दर ईश्वर का प्यार ख़ुद-ब -ख़ुद ही पैदा हो जायेगा. आज़मा करके देखो तो सही.

सन्तों की कृपा

ईश्वर के लिए यह खिचाव, प्यार और भक्ति सिर्फ सन्तों की कृपा से मिल सकती है. यह उन्ही की कृपा होती है कि हमारे दिलों में ईश्वर का विश्वास आता है और उस ईश्वर का नाम लेने की कामना पैदा होती है. सन्त हमारे दुनियावी माँ-बाप से जो हमारे जिस्म और दुनियाँ की ही देख-रेख करते हैं, ज़्यादा कृपालु और मेहरबान होते हैं, क्योकि वह हमेशा यह चाहते हैं कि हम दुनियाँ के कर्म और बन्धनों से हमेशा के लिए छूट जाएँ. उनकी ज़िंदगी का ख़ास ध्येय यही होता है कि वे सोई हुई आत्माओं को जगाएं, उनके ऊपर से अज्ञानता का पर्दा हटाएँ, उनको ईश्वर की तरफ़इ जाएँ और उनकी दुःख की ज़िन्दगी को शांति की ज़िन्दगी बना दें.

इसलिए हमको चाहिये कि हम सन्तो की कृपा हासिल करें. परमात्मा का नाम बराबर लेते रहें, अपनी ज़िन्दगी को पवित्र बनायें और आख़िर में ईश्वर को अपने दिल में अनुभव करें और फिर तमाम दुनियाँ में होता हुआ उसी का खेल देखें. जब हम ईश्वर को हर जगह देख पाएंगे तभी हमारी ज़िन्दगी ख़ुशी और आनन्द की ज़िन्दगी होगी. अगर हमने यह कैफ़ियत (मनोदशा) हासिल कर ली तो हमने अपनी ज़िन्दगी सफल कर ली.

इसलिए मैं फिर आपको नसीहत करता हूँ कि सन्तों की सौहबत में जाओ. उनकी कृपा हासिल करो जिससे तुम्हें परमत्मा का प्रेम मिलेगा. परमात्मा का ध्यान बराबर बना रहेगा और तुम्हारा मन शुद्ध होगा तथा ईश्वर का प्रेम तुमको अपने अन्दर अनुभव होगा जिससे तुम हमेशा - हमेशा के लिए जन्म-मरण के चक्कर से छूट जाओगे और हमेशा का आनन्द प्राप्त कर सकोगे.

गुरुदेव तुम्हारा कल्याण करें .

राम सन्देश - दिसम्बर १९९४